श्री आर. वी. बड़े : मिनिस्टर्स वर्किंग ग्रूप ने जो रिपोर्ट भेजी है उसके कुछ डीटेल्स बताने की कृपा करेंगे ?

श्री एल. एन. मिश्र : डीटेल तो लम्बा सा है। उन्होंने बताया है कि पौने तीन करोड़ के करीब खर्च होगें और क्या क्या सुविधाएं देनी चाहिएं। उनकी राय है कि दिल्ली में ड्राई पोर्ट बनाया जाय तो दिल्ली के आस पास के जो प्रान्त है पंजाब, हरयाना, राजस्थान और उत्तर प्रदेश, यहां के लोगों को अपना सामान बाहर भेजने में सुविधा होगी और अगर यह ड्राई पोर्ट यहां हुआ तो यहां के लोगों की उन्नति होगी।

श्री हुकम चन्द कछवाय : यह जो रिपोर्ट अब भेजी है क्या आप ऐसा मानते हैं कि इसमें जो पौने तीन करोड़ रुपया खर्च होने वाला है इस खर्चे को देखते हुए और इससे जो लाभ होने वाला है लोगों को और सरकार को जो इनकम होने वाली है इन सारी बातों को देखते हुए इसको बनाना आवश्यक है और इसकी आवश्यकता को देखते हुए क्या आप इस सिफारिश को मानने के लिए तैयार है ? यदि हां, तो कब तक बनाने का आपका विचार है ?

श्री एल. एन. मिश्र : पौने तीन करोड़ रुपये कोई ज्यादा नहीं हैं, उससे हम नहीं घबड़ाते। सवाल यह उठता है कि इसको किस तरह चलाया जा सकता है और चलाने की सम्भावना हुई, और यह फीजिबल हुआ तो हम इसको करना चाहते हैं। तभी तो इसके पीछे पड़े हुए हैं, समिति बैठा रहे हैं, लोगों को कह रहे हैं कि इसकी जांच करें और सम्भव हो सके तो इसको हम यहाँ बनावें।

"रामचरित मानस" की चौथी शताब्दी

*1572. **श्री शंकरदयाल सिंह** : क्या **गृह मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने संसार की महानतम रचना "रामचरित मानस" की चौथी शताब्दी मनाने के लिए कोई व्यापक योजना तैयार की है ;

(ख) यदि हां, तो उनकी रूपरेखा क्या है तथा क्या इस उद्देश्य के लिए कोई समिति गठित की गई है ; और

(ग) क्या सरकार का विचार इस अवसर पर गोस्वामी तुलसी दास की कोई प्रतिमा स्थापित करने का है ?

गृह-मंत्रालय में उप-मंत्री (श्री मोहसिन) : (क) और (ख). रामचरित मानस चतुःशती राष्ट्रीय समिति ने, जो एक गैर-सरकारी पंजीकृत समिति है, राम चरित मानस की चतुर्थ शताब्दी मनाने के लिए एक कार्यक्रम बनाया है जिसमें विचार-गोष्ठियां, रामायण पर एक विश्व सम्मेलन, मानस भवन निर्माण इत्यादि शामिल है, और उसने शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय से आर्थिक सहायता के लिए अनुरोध किया है। समिति का अनुरोध विचाराधीन है।

(ग) जी नहीं, श्रीमान्।

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि उन्होंने इस महान कृति की चतुर्थ शताब्दी के अवसर पर विदेशों में प्रचार प्रसार के लिए क्या सरकार ने कोई योजना बनाई है ?

SHRI MOHSIN : Ram Charit Manas Chatuhshati Rashtriya Samiti which has been constituted to celebrate the Fourth Centenary of Ram Charit Manas is a society registered under the Registered Societies Act. Government have no scheme but the society has formulated a scheme.

श्री शंकर दयाल सिंह : अध्यक्ष महोदय, विदेशों में क्योंकि बहुत से भारतवासी रहते हैं और वह इसमें इन्टेरेस्टेड हैं इसलिए मैंने आपसे बिल्कुल स्पेसिफिक इस सवाल का जवाब जानना चाहा है कि इस अवसर पर आप विदेशों में क्या करने जा रहे हैं ?

एक माननीय सदस्य : समिति करेगी, गवर्नमेंट नहीं ।

श्री शंकर दयाल सिंह : समिति उसके लिए सक्षम है क्या ?

SHRI MOHSIN : Various programmes are envisaged by the Samiti. Some of them are programmes for seminars and other activities like publication of different types of...(*Interruptions*) I will tell you the whole thing. There are programmes for holding seminars and other activities, publication of different types of editions of Ram Charit Manas, world conference of Ramayana, holding of exhibitions of paintings, sculptures etc. connected with Ramayana. These are all under the scheme.

श्री शंकर दयाल सिंह : मैं जानना चाहता हूं कि सरकार इसमें कितना रुपया खर्च करेगी ?

SHRI MOHSIN : They have asked for Rs. 75 lakhs and it is still under the consideration of the Government how much is to be sanctioned.

श्री बी. पी. मौर्य : रामचरित मानस को आंख खोल कर बुद्धि से पढ़ा जाय तो इसमें विषमता है, अस्पृश्यता है, स्त्री के प्रति घृणा है, शूद्रों के प्रति द्वेष है । ताजीरातहिन्द के.... (**व्यवधान**).....अध्यक्ष महोदय, मैं पूछ रहा था कि रामचरित मानस को यदि बुद्धि की कसौटी पर कस कर पढ़ा जाय तो इसमें शूद्रों के प्रति घृणा, द्वेष और हिंसा है, स्त्री के प्रति घृणा और द्वेष है... (**व्यवधान**)...

DR. KAILAS : I think, Sir, it does not arise out of the question.

MR. SPEAKER : Mr. Mauria, please don't ask controversial questions.

श्री बी. पी. मौर्य : ऐसा कोई धार्मिक ग्रन्थ, चाहे वह किसी भी धर्म का हो, जो विधान की भावना के विरुद्ध जाता है तो उसको सरकार की ओर से बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए । क्या सरकार इस पर फिर से विचार करेगी... (**व्यवधान**)...

SHRI MOHSIN : Government does not consider the opinion given by the Hon. Member as correct. Ramayana book is considered as literary piece of great importance representing the great tradition and culture of India.

SHRI SAMAR GUHA : Ramayana written by Tulsidas is a great piece of literature. I want to draw the attention of the Government to this fact. In Indonesia a Ramayana festival is going to be held very soon. They have invited all the countries of the world.

MR. SPEAKER : It is not a relevant question.

SHRI SAMAR GUHA : Sir, yo cannot cut me out in that way. You have not seen the report. They wanted India to participate. Are they going to send a team ?

MR. SPEAKER : It does not arise out of the question.

SHRI SAMAR GUHA : *

MR. SPEAKER : This will not go on record. Do not shout ; please sit down.

*Not recorded.

SHRI SAMAR GUHA : Every time, you are doing it.....

MR. SPEAKER : This Member is not behaving well.....

SHRI SAMAR GUHA : Why are you in a hurry to gag me every time ?

MR. SPEAKER : I am not going to allow that question. It is an irrelevant question. May I ask him whether he is going to behave or not ?.....

SHRI SAMAR GUHA : I shall behave, and I am behaving. But you are not giving a Member their respect that he deserves. That is not expected of the Speaker. Respect is mutual. You are the custodian of the House and if you do not maintain our honour, you cannot expect your honour also to be maintained.

MR. SPEAKER : This gentleman is a great headache for me. What to do now ?

SHRI DINEN BHATTACHARYYA : If the question has relevance, how can you stop it ? He says that it has relevance, and he is asking the question. How can you stop him ? This is not fair.

MR. SPEAKER : It is not relevant at all.

SHRI SAMAR GUHA : Indonesia has...

MR. SPEAKER : It is not relevant at all. He cannot cow me down like that. I am not prepared for that. Let him take it for granted.

SHRI SAMAR GUHA : On a point of order. On what basis do you say that it is not relevant ?

MR. SPEAKER : No points of order are raised during the Question Hour. Let him please sit down.

SHRI SAMAR GUHA : This is absolutely wrong. This is not expected of the Speaker.

श्री रामरतन शर्मा : क्या माननीय मंत्री महोदय को पता है कि रामचरित मानस की एक पाण्डुलिपि, उसके रचियता श्री तुलसी-दास जी के राम-राजापुर में अभी भी है। उसकी सुरक्षा के लिए माननीय मंत्री जी क्या कर रहे हैं ? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि राजापुर को टूरिस्ट सेन्टर बनाने की तरफ क्या सरकार का ध्यान गया है ?

SHRI MOHSIN : I have already said that these programmes are executed by that registered society and not on behalf of Government. They have asked for funds from the Government and we are considering it.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY : I am grateful to the hon. Minister for having spelt out the correct meaning of *Ramcharitmanas*. After Valmiki and Kalidasa, he was the best poet. Is he going to be honoured just as Rabindranath Tagore has been honoured by us ?

SHRI MOHSIN : It is all hypothetical. If same societies are formed and some members of the public come forward and ask for funds, it will be considered by Government.

Preferential Tariffs granted by Japan on goods from developing countries

*1574. SHRI D. K. PANDA : Will the Minister of FOREIGN TRADE be pleased to state :

(a) whether Japan has granted perferential tariffs on goods from developing countries with effect from the Jst August, 1971 ;

(b) if so, the concessions offered ; and

(c) how far these concessions will benefit India's exports to Japan ?